

# Hanuman ji

## हनुमान चालीसा

### दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार  
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार

### चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी  
कुमति निवार सुमति के संगी ॥३॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे  
काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥५॥

विद्यावान गुनी अति चातुर  
राम काज करिबे को आतुर ॥७॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा  
विकट रूप धरि लंक जरावा ॥९॥

लाय सजीवन लखन जियाए  
श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥११॥

राम दूत अतुलित बल धामा  
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा  
कानन कुंडल कुँचित केसा ॥४॥

शंकर सुवन केसरी नंदन  
तेज प्रताप महा जगवंदन ॥६॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया  
राम लखन सीता मनबसिया ॥८॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे  
रामचंद्र के काज सवारै ॥१०॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई  
तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥१२॥

सहस्र बदन तुम्हरो जस गावै  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥१३॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते  
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना  
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥१७॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही  
जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥१९॥

राम दुआरे तुम रखवारे  
होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

आपन तेज सम्हारो आपै  
तीनों लोक हाँक तै कापै ॥२३॥

नासै रोग हरे सब पीरा  
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥

सब पर राम तपस्वी राजा  
तिनके काज सकल तुम साजा ॥२७॥

चारों जुग परताप तुम्हारा  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता  
अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

तुम्हरे भजन राम को पावै  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

और देवता चित्त ना धरई  
हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥३५॥

जै जै जै हनुमान गुसाईँ  
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥३७॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा  
होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥३९॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा  
नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा  
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू  
लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥१८॥

दुर्गम काज जगत के जेते  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना  
तुम रक्षक काहु को डरना ॥२२॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै  
महावीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

संकट तै हनुमान छुडावै  
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

और मनोरथ जो कोई लावै  
सोई अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

साधु संत के तुम रखवारे  
असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥

राम रसायन तुम्हरे पासा  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई  
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४॥

संकट कटै मिटै सब पीरा  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥

जो सत बार पाठ कर कोई  
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा  
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥४०॥

## दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।  
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥